11सितंबर । युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी की 53वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी की 8वीं पुण्यतिथि पर साप्ताहिक समारोह के अंतर्गत चल रहे सप्त दिवसीय श्री राम कथा का तात्विक विवेचन के पांचवे दिन कथा व्यास अशर्फी भवन अयोध्या के पीठाधीश्वर अनंत श्री विभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य श्री श्रीधराचार्य जी महाराज ने व्यास मंच से कहा कि ब्रह्म मुहूर्त का समय सतयुग का समय होता है। प्रातः काल का समय त्रेता का समय होता है इसलिए ब्रह्म मुहूर्त और प्रातः काल में प्रभु का संकीर्तन अधिक लाभदायक होता है। जब तक पृथ्वी पर वेद का पारायण होता रहेगा, गायत्री का जप होता रहेगा, यज्ञ हवन होते रहेंगे ,तब तक पृथ्वी की रक्षा होती रहेगी। गऊ और ब्राहमण हमारे आधार है क्योंकि ये जगत के कल्याण के लिए ही अपना जीवन समर्पित किए रहते हैं। गौमाता यज्ञ की जननी है क्योंकि यज्ञ का संपूर्ण सामग्री उन्ही से मिलता है। पंचगव्य उन्हीं से प्राप्त होता है। बिना पंचगव्य के यज्ञ संभव नहीं है। ब्राह्मण वेद मंत्र व

गायत्री मंत्र के माध्यम से लोक कल्याण की कामना करते हैं इसलिए सदैव धर्मशील राजाओं द्वारा ब्राह्मण के लिए अनुकूल वातावरण दिया गया है। यदि भगवान की पूजा अर्चना बंद हो जाएगी ,यज्ञ के स्वाहा की आवाज नहीं सुनाई देगी, पितरों का तर्पण नहीं होगा तब भयंकर स्थित होगी घोर कलयुग आयेगा। एक समय ऐसा था जब हम स्वतंत्र नहीं थे बैठ के कथा नहीं सुन सकते थे, जनेऊ धारण नही कर पाते थे। पर आज वातावरण अनुकूल है हम भगवत मार्ग पर चलकर, भगवत भजन में समय बिता कर परम आनंद को प्राप्त कर सकते हैं। ऋषि के आश्रम में किसी आसुरी शक्ति का कोई प्रभाव नहीं होता था उनके तप से पूरा वातावरण शुद्ध रहा करता था। तपस्वी से बड़ा कोई शक्तिशाली नहीं हो सकता क्योंकि तपस्वी किसी से प्रभावित नहीं होते हैं वह विरागी होते है परंतु वन में राम के सुंदर रूप को देखकर सभी ऋषि मोहित हो जाते हैं। जो समाधि में स्थिर महापुरुष होते हैं वे भी भगवान के गुण एवं रूप का अनुभव करते हैं। प्रभु के आनंद रूप का मंगलमय

रसपान करते हैं, कहते हुए व्यास ने "मंगलम मंगलम मंगलम मंगलम" भजन सुनाया।

कथा व्यास ने कहा जितना अधिक भजन करोगे मन उतना अधिक निर्मल होगा और प्रभु तो निर्मल मन में ही बसते हैं "कलयुग केवल नाम अधारा । सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।।"जिस भी परिस्थिति में हो राम का नाम लिया करो जहां भी हो प्रभु को याद करते रहो एक समय ऐसा आएगा कि अपने आप आपका मन राम में रम जाएगा । अजपाजपा की स्थिति हो जाएगी तो प्रभु बहुत समीप होंगे।

मन को कैसे निर्मल करें जैसे तीन अक्षर का साबुन लगाने से शरीर निर्मल हो जाता है वैसे ही दो अक्षर प्रभु का नाम राम है उसे जपने से मन निर्मल हो जाता है । कहते हुए उन्होंने

" राम नाम के साबुन से जो मन का मैल छुड़ाएगा। निर्मल मन, प्रभु राम का दर्शन पाएगा।।"भजन सुना कर भाव विभोर कर दिया।

भजन का महत्व बताते हुए कथा व्यास ने " गोविंद राधे माधव गोपाल राधे माधव। मेरे राघव ,मेरे राघव, मेरे राघव" एवं जय दशरथ नंदन राघव ,जय यशोदा नंदन माधव" भजन गाया।

शरभंग ऋषि का वर्णन करते हुए कथा व्यास कहते हैं कि वे प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त थे। इतने बड़े तपस्वी तथा ज्ञानी थे जिनको लेने के लिए स्वर्ग से कई बार देवता विमान लेकर आए किंतु उन्होंने जाने से मना कर दिया । जब भगवान चित्रकूट से आगे बढ़ते हैं तो मार्ग में ऋषि उनसे मिलते हैं प्रभु से मिलकर वे बताते हैं कि मुझे आपके दर्शन के बाद ही पर लोक जाना था ,मुझे पता हो गया था कि आप अयोध्या से निकल चुके है , इसलिए मैंने बैकुंठ तक भी जाना उचित नहीं समझा। आपके चरण शरण को पाने के लिए मेरे पास कोई साधन नहीं था, आप मेरे

भाग्य से मुझे मिले है । मुझे अपनी शरण में ले लीजिए, आप मुझे ठुकरा भी देंगे तो भी मैं आपके चरण में ही रहना चाहूंगा।

जैसे आग की चिंगारी को कोयले के खंड से अलग करो तो चिंगारी बुझ जाएगी और यदि किसी बड़े कोयले से जोड़ दो तो जब तक बड़े कोयले का पिंड धड़कता रहेगा तब तक चिंगारी जलती रहेगी। उसी प्रकार हम जब तक श्रीराम के चेतन से जुड़े रहेंगे तब तक हम राम से समाहित रहेंगे, तब तक हम धर्म से जुड़े रहेंगे, राम का दर्शन लेते रहेंगे और आनंद की प्राप्ति करते रहेंगे।

कभी कभी भगवान अपने आप को भक्तों का दास मानते है।वह कहते हैं "मैं भक्तन कर दास भगत मोर मुकुट"

सत्संग के महत्व को बताते हुए कथा व्यास ने "मिलती है संतों की संगत कभी-कभी, मिलती है राम नाम की दौलत कभी कभी " भजन सुनाते हुए कहा कि जीवन में कुछ बनाने का सबसे अच्छा मार्ग है सत्संग। बड़े भाग्य से सत्संग मिलता है इसलिए जब भी सतसंगत मिले तो अवश्य लाभ लो क्योकि जीवन का उद्धार सत्संग से ही संभव होगा। जिस प्रकार के कुसंगति जीवन को नष्ट कर देता है उसी प्रकार से सत्संग व्यक्ति के जीवन का उद्धार कर देता है।

जब वन में सीता जी ने श्रीराम से कहा कि आपका जीवन तपस्वी का जीवन है धनुष बाण लेने की क्या आवश्यकता है इसे ही आश्रम में रख दीजिये। तब श्रीराम ने कहा कि मैं अपने आश्रितों की रक्षा के लिए संकल्पित हूं मुझे अगर अपनी भुजाएं भी कटानी पड़े तो भी मैं पीछे नहीं हटूंगा ,धर्म की रक्षा के लिए मेरे हाथ में ये धनुष है।

कथा का प्रारंभ व्यास मंच के पूजन तथा समापन आरती एवं प्रसाद वितरण से हुआ। कथा का संचालन डॉ श्री भगवान सिंह ने किया।

इस अवसर पर योगी कमलनाथ जी महाराज, महत्त्व रविंद्र दास जी महाराज, महापौर सीताराम जायसवाल, अवधेश सिंह, गोरख सिंह, अजय कुमार सिंह, महेश पोद्दार , दुर्गेश बजाज, डॉ अरविन्द चतुर्वेदी, अरुणेश शाही, रणजीत सिंह, बृजेश मणि त्रिपाठी, विनय गौतम उपस्थित रहे।